प्रमाणपत्र

मै यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. समाधानी गजानन पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध "अमृतलाल नागर के 'अमृत और विष" उपन्यास का अनुशीलन" मेरे मार्गदर्शन में लिखा है । यह उनकी मौलीक रचना है, जो तथ्य इस लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं । प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

निर्देशक

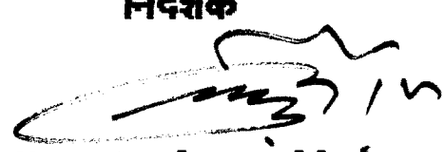

डॉ. वसंत केशव मोरे
एम.ए.पीएच.डी.

कोल्हापुर
दिनांक : 13/5/94

भूमिका

अमृतलाल नागरजी का व्यक्तित्व वस्तुतः बहुमुखी है । कहानी, नाटक, निबंध, संस्मरण, उपन्यास, रेखाचित्र आदि सभी विधाओं में उन्होंने अपनी कलम को चलाया है । जब मैंने अमृतलाल नागरजी का अग्निगर्भा यह उपन्यास पढ़ा तब पता चला कि नागरजी एक सामाजिक उपन्यासकार है । इसकी कथावस्तु जानने के बाद उनके पूरे कृतित्व को जान लेने की भावना मन में उद्घाटित हुई । मेरे जैसी सामान्य छात्रा तो नागर के इतने विशाल कृतित्व पर अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं कर सकती । इसलिए मैंने उनका सामाजिक उपन्यास अमृत और विष का अनुशीलन करना अपने अध्ययन का लक्ष्य बनाया ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का अनुसंधान करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए ।

१) क्या "अमृत और विष" उपन्यास सफल समस्याप्रधान उपन्यास है ?

२) "अमृत और विष" उपन्यास में किन समस्याओंका चित्रण किया है ? और किस समस्या का सबसे प्रभावी चित्रण हुआ है ?

३) "अमृत और विष" उपन्यास की शैलीगत विशेषता क्या है ?

४) "अमृत और विष" उपन्यास में भारतीय जीवन के किस कालखंड का चित्रण है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर उपसंहार में दिए है ।

अध्ययन की सुविधा के लिए अध्याय विभाजन निम्न प्रकार से किया है ।

१) प्रथम अध्याय – अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व । इस अध्याय में नागरजी का जन्म परिवार, शिक्षा, नौकरी आदि का विवेचन किया है ।

२) द्वितीय अध्याय – अमृतलाल नागर के साहित्य का संक्षिप्त परिचय । इसमें नागरजी के गद्य साहित्य के लगभग सभी विधाओंका विवेचन किया है ।

३) तृतीय अध्याय – अमृत और विष उपन्यास की कथावस्तु । इस उपन्यास की कथावस्तु में दोहरे कथानक की सृष्टी की है ।

४) चतुर्थ अध्याय – अमृत और विष उपन्यास का चरित्र चित्रण । इसमें प्रस्तुत उपन्यास के

पात्रों की विविधता स्पष्ट कर दी है । इस उपन्यास के पात्र वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते है और व्यक्तिगत विशेषताओं से भी युक्त है ।

५) पंचम अध्याय – अमृत और विष उपन्यास में देशकाल वातावरण । इस उपन्यास में लखनऊ के शहरी वातावरण का चित्रण किया है । यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर कालीन परिस्थितीयों का दर्पण है ।

६) षष्ठ अध्याय – अमृत और विष उपन्यास की भाषाशैली । इस अध्याय में नागरजी ने जनसाधारण और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है ।

७) सप्तम अध्याय – अमृत और विष उपन्यास का उद्देश्य । इसमें इस उपन्यास की रचना सामाजिक उद्देश्य से की गयी है इसका विवेचन किया है ।

उपसंहार –

इस विषय का अनुसंधान करते समय मेरे मन मे जो सवाल खडे हुए थे उनके जवाब मैने उपसंहार में दर्ज किये है और अनुसंधान की उपलब्धियों का निर्देश भी उपसंहार में किया है ।

ऋणनिर्देश –

इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मुझे जिन विद्वानोंका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना नैतिक दायित्व समझती हूँ । यह लघु शोध प्रबंध पूर्ण करने में मेरे गुरुवर्य डॉ. व्ही. के. मोरेजी ने अनमोल सहयोग दिया है । उनके प्रति कृतज्ञ होना मेरा परमधर्म है आप के सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न होने की कल्पना ही नही की जा सकती प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध आप ही के योग्य निर्देशन का परिणाम है । आप के इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है ।

इनके साथ ही मेरे श्रध्देय डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, डॉ. बी. बी. पाटीलजी का आत्मिक सहयोग और उचित मार्गदर्शन से मेरा यह शोधकार्य पुरा हुआ है । इसलिए उनके प्रति आभार प्रकट करना मै अपना दायित्व समझती हूँ । शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं संबंधित सभी कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ ।

इस शोध कार्य में एस. पी. सावंत, व्ही. बी. पाटील, एन. एन. घनवडे, ए. एम. साळुंखे आदि स्नेही जनो के साथ मेरे पूज्य माता - पिताजी का पर्याप्त सहकार्य मिला है । जिसकी बदौलत मैं अपना यह प्रबन्ध पूरा कर सकी । अन्त में मै उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

अतः इस लघु शोध प्रबंध में जो कुछ भी त्रुटियाँ है उनको निराकरण करने का प्रयत्न तो कर चुकी हूँ फिर भी नजर अंदाज से कुछ त्रुटियाँ रह जाने की संभावना है अतः उन त्रुटियों को स्वीकार करते हुए आपसे क्षमा चाहती हूँ ।

अंत मे उन सबके प्रति आभार प्रकट करना मै अपना कर्तव्य समझती हूँ । जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहन, प्रेरणा और सहाय्यता दी है उन सबकी मैं आभारी हूँ ।

कोल्हापुर
दिनांक : 13/5/94

समाधानी पाटील